e-ISSN:2582-7219

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

Volume 6, Issue 1, January 2023

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

Impact Factor: 7.54

6381 907 438 6381 907 438 ijmrset@gmail.com www.ijmrset.com

International Journal Of Multidisciplinary Research In Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 1, January 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601024 |

हिंदी कविता में प्रकृति-चेतना का विकास : शास्त्रीय परंपरा से आधुनिक संवेदना तक

अमिता जैन

सह आचार्य, हिंदी साहित्य

चौधरी बल्लू राम गोदारा राजकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, श्रीगंगानगर

सारांश

हिंदी कविता में प्रकृति का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। हिंदी काव्य परंपरा में प्रकृति-चित्रण का स्वरूप समय के साथ निरंतर बदलता और विकसित होता दिखाई देता है। शास्त्रीय और प्रारंभिक काव्य में प्रकृति का उपयोग ऋतु-वर्णन, नदी, पर्वत, वन, पशु-पक्षी और प्राकृतिक दृश्यों के माध्यम से किया गया। इस काल के कवियों ने प्रकृति को केवल बाहरी दृश्य के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे मानवीय भावों की अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बनाया। भक्ति काल में प्रकृति का स्वरूप धार्मिक और आध्यात्मिक भावनाओं से जुड़ गया। इस समय प्रकृति के विविध तत्वों के माध्यम से ईश्वर की महिमा, भक्ति-भाव, प्रेम, विरह और जीवन की आंतरिक अनुभूतियों को व्यक्त किया गया। भक्त कवियों ने प्रकृति को ईश्वर की सृष्टि के रूप में देखा और उसके माध्यम से मानव और ईश्वर के संबंध को प्रकट किया। आगे चलकर आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति-चित्रण अधिक व्यक्तिगत, यथार्थपरक और संवेदनात्मक रूप में सामने आया। आधुनिक कवियों ने प्रकृति को केवल सुंदरता और आनंद का प्रतीक नहीं माना, बल्कि उसे मनुष्य के संघर्ष, सामाजिक बदलाव और जीवन की जटिलताओं से जोड़कर भी प्रस्तुत किया। समकालीन हिंदी कविता में प्रकृति का चित्रण और अधिक व्यापक हो गया है। अब कवि प्रकृति के माध्यम से पर्यावरणीय संकट, औद्योगीकरण, शहरीकरण, प्रदूषण और मानवीय हस्तक्षेप से उत्पन्न समस्याओं को भी अभिव्यक्त करते हैं। इस दृष्टि से प्रकृति केवल काव्य-सौंदर्य का आधार नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और पर्यावरणीय चेतना का महत्वपूर्ण माध्यम बन गई है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हिंदी कविता में प्रकृति-चित्रण की बदलती प्रवृत्तियों का अध्ययन करना है। इसमें शास्त्रीय, मध्यकालीन और आधुनिक काव्य के उदाहरणों के आधार पर यह समझने का प्रयास किया गया है कि समय के साथ कवियों ने प्रकृति को किस प्रकार देखा, समझा और अपने काव्य में व्यक्त किया। इस प्रकार यह अध्ययन हिंदी कविता में प्रकृति के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और संवेदनात्मक महत्व को स्पष्ट करता है।

मूल शब्द: हिंदी कविता, प्रकृति-चित्रण, शास्त्रीय काव्य, आधुनिक कविता, पर्यावरण चेतना

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 6, Issue 1, January 2023 |
| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601024 |

प्रस्तावना :

हिंदी कविता में प्रकृति का चित्रण आरंभ से ही एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली तत्व रहा है। प्रकृति ने कवियों की कल्पना, संवेदना और अभिव्यक्ति को निरंतर प्रेरित किया है। हिंदी काव्य-परंपरा में प्रकृति केवल दृश्य-सौंदर्य का विषय नहीं रही, बल्कि मानव जीवन, भावनाओं, आध्यात्मिकता, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक अनुभवों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भी रही है। कवियों ने ऋतुओं, नदियों, पर्वतों, वनों, पशु-पक्षियों और प्राकृतिक वातावरण के माध्यम से जीवन के विविध पक्षों को उजागर किया है। प्रकृति के ये चित्र कविता को सरस, संवेदनशील और जीवन के अधिक निकट बनाते हैं।

शास्त्रीय हिंदी काव्य में प्रकृति का स्वरूप मुख्यतः सौंदर्य, भाव और प्रतीक के रूप में दिखाई देता है। इस दौर में प्रकृति को मानव-जीवन की भावनाओं से जोड़कर प्रस्तुत किया गया। ऋतु-परिवर्तन, वर्षा, बसंत, चाँदनी, नदी, पुष्प, वन और पक्षियों के माध्यम से कवियों ने प्रेम, विरह, आनंद, करुणा और जीवन की अनुभूतियों को व्यक्त किया। प्रकृति यहाँ केवल बाहरी वातावरण नहीं है, बल्कि मनुष्य के भीतर चल रहे भावों की अभिव्यक्ति का साधन भी है। इस कारण शास्त्रीय काव्य में प्रकृति का वर्णन कलात्मकता और संवेदनशीलता दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण माना जाता है।

भक्ति काल में प्रकृति का संबंध धार्मिक और आध्यात्मिक भावनाओं से अधिक गहरा हो गया। भक्त कवियों ने प्रकृति को ईश्वर की सृष्टि और उसकी महिमा के प्रतीक के रूप में देखा। प्राकृतिक तत्वों के माध्यम से भक्ति, प्रेम, समर्पण, विरह और आध्यात्मिक अनुभूति को अभिव्यक्त किया गया। प्रकृति कभी ईश्वर के सौंदर्य को प्रकट करती है, तो कभी भक्त और भगवान के संबंध को गहराई देती है। इस प्रकार भक्ति काव्य में प्रकृति आध्यात्मिक चेतना और मानवीय भावनाओं के बीच सेतु का कार्य करती है।

आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति-चित्रण का स्वरूप और अधिक विस्तृत, व्यक्तिगत तथा यथार्थपरक हो गया। आधुनिक कवियों ने प्रकृति को केवल सौंदर्य या आध्यात्मिकता के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे मनुष्य के संघर्ष, सामाजिक परिवर्तनों और जीवन की जटिलताओं से भी जोड़ा। औद्योगीकरण, शहरीकरण, प्रदूषण, पर्यावरणीय संकट और मनुष्य द्वारा प्रकृति के अत्यधिक दोहन जैसे विषय आधुनिक कविता में प्रमुखता से सामने आते हैं। इस दृष्टि से प्रकृति आधुनिक कविता में चेतावनी, चिंता और सामाजिक जागरूकता का विषय भी बन जाती है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 6, Issue 1, January 2023 |
| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601024 |

उद्देश्य :

प्रस्तुत शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. हिंदी कविता में शास्त्रीय से आधुनिक काल तक प्रकृति-चित्रण के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. शास्त्रीय और आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति-चित्रण की प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विश्लेषण करना।
3. हिंदी कविता में प्रकृति-चित्रण की भाषा, शैली और अभिव्यक्ति में आए परिवर्तनों को स्पष्ट करना।
4. प्रकृति से संबंधित शब्दावली, प्रतीकों, बिंबों और काव्य-रूपों के प्रयोग का अध्ययन करना।
5. प्रमुख शास्त्रीय और आधुनिक कवियों की रचनाओं में प्रकृति के रूपक, भाव और दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।

हिंदी साहित्य में शास्त्रीय और आधुनिक दृष्टिकोण की परिभाषा :

शास्त्रीय दृष्टिकोण - हिंदी साहित्य में शास्त्रीय दृष्टिकोण से आशय उस साहित्यिक दृष्टि से है, जिसमें प्रकृति को सौंदर्य, आध्यात्मिकता, आदर्श और मानवीय भावनाओं के साथ जोड़कर देखा गया है। इस दृष्टिकोण में प्रकृति केवल बाहरी दृश्य या वातावरण नहीं है, बल्कि जीवन, धर्म, संस्कृति और मानवीय संवेदनाओं का महत्वपूर्ण आधार है। प्राचीन साहित्य, वेद, उपनिषद, महाकाव्य और शास्त्रीय काव्य-परंपरा में प्रकृति को ईश्वर की सृष्टि, देवी-देवताओं की लीला-भूमि तथा मानव जीवन की सहचरी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। ऋतु-चक्र, नदी, पर्वत, वन, पुष्प, चंद्रमा, सूर्य और पक्षियों के माध्यम से कवियों ने प्रेम, विरह, आनंद, करुणा और आध्यात्मिक भावों को व्यक्त किया। इस दृष्टिकोण में प्रकृति और मनुष्य के बीच सामंजस्य की भावना प्रमुख है। प्रकृति को आदर्श, पवित्र और जीवनदायी शक्ति के रूप में देखा गया है, जो मनुष्य के जीवन को सौंदर्य, संतुलन और आध्यात्मिक गहराई प्रदान करती है।

आधुनिक दृष्टिकोण - आधुनिक दृष्टिकोण में प्रकृति को अधिक यथार्थवादी, अनुभवपरक और सामाजिक संदर्भों से जुड़ा हुआ माना गया है। आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति केवल सौंदर्य या आनंद का विषय नहीं रही, बल्कि वह मानवीय संघर्ष, सामाजिक परिवर्तन, पर्यावरणीय संकट और जीवन की जटिलताओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई है। आधुनिक कवियों ने प्रकृति को बदलते समय, औद्योगीकरण, शहरीकरण, प्रदूषण, तकनीकी विकास और मनुष्य द्वारा प्रकृति के दोहन के संदर्भ में देखा है। इस दृष्टिकोण में प्रकृति का चित्रण अधिक संवेदनशील और चेतनापरक है। कवि प्रकृति के माध्यम से मानव जीवन की पीड़ा, अकेलापन, असंतुलन, विस्थापन और पर्यावरणीय संकट को व्यक्त करते हैं। आधुनिक दृष्टिकोण प्रकृति को केवल आदर्श रूप में नहीं देखता, बल्कि उसके नष्ट होते स्वरूप और मनुष्य के साथ उसके बदलते संबंधों को

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 6, Issue 1, January 2023 |
| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601024 |

भी सामने लाता है। इस प्रकार आधुनिक दृष्टिकोण में प्रकृति सामाजिक चेतना, पर्यावरण जागरूकता और मानवीय संवेदना का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाती है।

शास्त्रीय दृष्टिकोण में प्रकृति-चित्रण :

शास्त्रीय दृष्टिकोण में प्रकृति को केवल सौंदर्य-वर्णन का साधन नहीं माना गया, बल्कि उसे आध्यात्मिकता, मानवीय संवेदनाओं और जीवन-दर्शन का प्रतीक समझा गया है। इस दृष्टि में प्रकृति और मानव जीवन के बीच गहरा संतुलन और सामंजस्य दिखाई देता है।

वेदों और उपनिषदों में प्रकृति का वर्णन :

वेदों और उपनिषदों में प्रकृति का चित्रण अत्यंत गंभीर, व्यापक और आध्यात्मिक रूप में मिलता है। यहाँ प्रकृति को सृष्टि के मूल आधार तथा दिव्यता के प्रतीक के रूप में देखा गया है। ऋग्वेद में पृथ्वी, आकाश, जल, वायु और अग्नि जैसे प्राकृतिक तत्वों को देवतुल्य मानकर उनकी स्तुति की गई है। सूर्य, चंद्रमा, नदियाँ और पर्वत भी जीवनदायी शक्तियों के रूप में वर्णित हुए हैं। उपनिषदों में प्रकृति को ब्रह्म की व्यापक सत्ता का अंग माना गया है। यहाँ प्रकृति और आत्मा के संबंध पर विशेष बल दिया गया है। प्रकृति मनुष्य के लिए केवल बाहरी संसार नहीं, बल्कि साधना, ज्ञान और आत्मबोध प्राप्त करने का माध्यम भी है।

संस्कृत काव्य में प्रकृति का स्थान :

संस्कृत काव्य में प्रकृति-चित्रण का विशेष महत्व है। इस काव्य परंपरा में प्रकृति के माध्यम से सौंदर्य, प्रेम, विरह और मानवीय भावनाओं को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया गया है। कालिदास को प्रकृति का श्रेष्ठ कवि माना जाता है। उनकी रचनाओं, जैसे अभिज्ञानशाकुंतलम् और मेघदूतम्, में प्रकृति अत्यंत सजीव और भावपूर्ण रूप में उपस्थित है। ऋतुओं, नदियों, बादलों, पर्वतों और वनस्पतियों का उनका चित्रण पात्रों की आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करने में सहायक बनता है। मेघदूतम् में यक्ष बादल को संदेशवाहक बनाकर अपनी प्रिय तक संदेश पहुँचाने की कल्पना करता है। इसमें मेघ, पर्वत, नदियों और वन-प्रदेशों का सूक्ष्म तथा सौंदर्यपूर्ण चित्रण मिलता है। कालिदास की प्रमुख विशेषता यह है कि वे प्रकृति को मानवीय भावनाओं का वाहक और प्रतीक बना देते हैं। भास के नाटकों में भी प्रकृति कथा के परिवेश को सुंदर, प्रभावी और जीवंत बनाने का कार्य करती है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 6, Issue 1, January 2023 |
| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601024 |

भक्तिकालीन कविताओं में प्रकृति-चित्रण :

भक्तिकालीन कविता में प्रकृति-चित्रण मुख्य रूप से भक्ति, प्रेम, आध्यात्मिकता और ईश्वर-समर्पण से जुड़ा हुआ है। इस काल के कवियों ने प्रकृति को केवल सौंदर्य-वर्णन का साधन नहीं माना, बल्कि उसे भक्ति-भाव, ईश्वरीय अनुभूति और मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया। प्रकृति के माध्यम से भक्त कवियों ने ईश्वर की महिमा, प्रेम, विरह, समर्पण और जीवन-दर्शन को सरल तथा प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया।

सूरदास के काव्य में प्रकृति का चित्रण कृष्ण-लीला के संदर्भ में मिलता है। उनके पदों में वृंदावन का प्राकृतिक वातावरण, यमुना नदी, कुंज-वन, वसंत ऋतु, फूल-पत्तियाँ और गोपियों की चपलता कृष्ण की बाल-लीलाओं और रास-लीला को जीवंत बनाते हैं। सूरदास के यहाँ प्रकृति कृष्ण-भक्ति की भावभूमि तैयार करती है और आनंद, प्रेम तथा वात्सल्य भाव को गहराई देती है।

तुलसीदास ने रामचरितमानस में प्रकृति को आदर्शवादी और आध्यात्मिक दृष्टि से प्रस्तुत किया है। उनकी अवधी भाषा सरल, सहज और भक्ति-भाव से पूर्ण है। राम के वनवास प्रसंग में वन, नदी, पर्वत, पुष्प और प्राकृतिक वातावरण को मर्यादा, त्याग और धर्म की भावना से जोड़ा गया है। तुलसीदास के यहाँ प्रकृति मानव जीवन और ईश्वर के बीच आध्यात्मिक संबंध को स्पष्ट करती है।

कबीर की रचनाओं में प्रकृति यथार्थवादी और प्रतीकात्मक रूप में दिखाई देती है। उन्होंने नदी, धरती, आकाश, जल, पवन और वृक्ष जैसे सरल प्राकृतिक प्रतीकों के माध्यम से गहरे आध्यात्मिक और दार्शनिक विचार व्यक्त किए हैं। उनके यहाँ प्रकृति बाहरी सौंदर्य से अधिक आत्मचिंतन, सत्य-बोध और जीवन-दर्शन का माध्यम बनती है।

आधुनिक युग में प्रकृति-चित्रण :

आधुनिक युग में प्रकृति का चित्रण केवल सौंदर्य और आध्यात्मिक भावों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वह मानवीय संघर्ष, सामाजिक चेतना और जीवन से जुड़े गहरे प्रश्नों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन गया। आधुनिक कवियों ने प्रकृति को यथार्थ जीवन, मानवीय संवेदना और बदलते सामाजिक परिवेश से जोड़कर प्रस्तुत किया।

छायावादी कवियों का योगदान :

छायावाद हिंदी साहित्य का ऐसा प्रमुख काव्य-युग है, जिसमें प्रकृति को मानवीय भावनाओं, कल्पनाओं और आंतरिक अनुभूतियों के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया। इस काल के कवियों ने प्रकृति को केवल बाहरी दृश्य के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे मानव-मन की संवेदना और आत्मानुभूति से जोड़ दिया।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 6, Issue 1, January 2023 |
| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601024 |

जयशंकर प्रसाद ने प्रकृति को आध्यात्मिकता और मानवीय चेतना से संबद्ध किया। उनकी कविताओं में हिमालय, चंद्रमा और गंगा जैसे प्राकृतिक तत्व उच्च चेतना, शांति और जीवन की व्यापकता के प्रतीक बनकर आते हैं।

सुमित्रानंदन पंत का प्रकृति-चित्रण अत्यंत कोमल, सौंदर्यपूर्ण और भावनात्मक है। उनकी कविताओं में पर्वत, नदियाँ, ऋतुएँ और पुष्प केवल प्राकृतिक दृश्य नहीं हैं, बल्कि मानवीय संवेदना और सौंदर्य-बोध के प्रतीक हैं। उनकी कविता उत्तरा में छायावादी शैली, भावात्मक भाषा और सौंदर्यपरक अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। पंत के यहाँ हिमालय, ऋतु और फूल मानव चेतना, सौंदर्य और आध्यात्मिक अनुभूति को व्यक्त करते हैं।

महादेवी वर्मा ने प्रकृति को अपने गहरे भावानुभव, अकेलेपन और करुण संवेदना से जोड़ा। उनकी कविताओं में बादल, वर्षा, पक्षी और वनस्पतियाँ केवल प्रकृति के अंग नहीं, बल्कि आत्मा की पीड़ा, विरह, उदासी और आध्यात्मिक यात्रा के प्रतीक बन जाते हैं।

प्रगतिवाद में प्रकृति का यथार्थवादी चित्रण :

प्रगतिवाद हिंदी कविता में यथार्थवाद, सामाजिक चेतना और जनजीवन से जुड़ा हुआ काव्य-आंदोलन है। इस दौर में प्रकृति का चित्रण केवल सुंदर दृश्यों या भावनात्मक अनुभूति के रूप में नहीं किया गया, बल्कि उसे मनुष्य के श्रम, संघर्ष और सामाजिक परिस्थितियों से जोड़कर देखा गया। प्रगतिवादी कवियों ने प्रकृति को ग्रामीण जीवन, किसान-समस्याओं और श्रमिक वर्ग के जीवन से संबंधित रूप में प्रस्तुत किया।

नागार्जुन की कविताओं में प्रकृति ग्रामीण समाज और किसान जीवन का महत्वपूर्ण अंग है। उनकी रचनाओं में खेत, वर्षा, मिट्टी, नदी और फसलें केवल प्राकृतिक तत्व नहीं हैं, बल्कि किसान के श्रम, आशा और संघर्ष से जुड़ी हुई हैं। वे प्रकृति के बदलते स्वरूप के माध्यम से ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों और सामाजिक यथार्थ को सामने लाते हैं।

केदारनाथ अग्रवाल ने प्रकृति को श्रम, शक्ति और जीवन-सौंदर्य का प्रतीक बनाया। उनकी कविताओं में नदी, पहाड़, धरती और खेत केवल सौंदर्य के प्रतीक नहीं, बल्कि मेहनतकश मनुष्य के जीवन और संघर्ष से जुड़े हुए हैं। उनके यहाँ प्रकृति श्रमिक वर्ग की ऊर्जा, संघर्षशीलता और जीवन-विश्वास को अभिव्यक्त करती है।

नई कविता और प्रकृति :

नई कविता आंदोलन में प्रकृति का चित्रण मनुष्य की आंतरिक उलझनों, व्यक्तिगत अनुभवों और सामाजिक विडंबनाओं से जुड़कर सामने आता है। इस दौर में प्रकृति केवल सौंदर्य या भावुकता का विषय नहीं रही, बल्कि वह मनुष्य के अकेलेपन, अस्तित्व-बोध, तनाव और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को व्यक्त करने का माध्यम बन गई।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|
| Volume 6, Issue 1, January 2023 |
| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601024 |

अज्ञेय ने प्रकृति को दार्शनिक और प्रतीकात्मक दृष्टि से देखा। उनकी रचनाओं में नदी, जंगल, पक्षी और द्वीप जैसे प्राकृतिक तत्व जीवन के गहरे प्रश्नों को प्रकट करते हैं। नदी के द्वीप में नदी और द्वीप के माध्यम से मनुष्य के अस्तित्व, अलगाव, आत्मबोध और अनुभवों की जटिलता को व्यक्त किया गया है। इसकी भाषा आधुनिक, बौद्धिक और प्रतीकात्मक है। अज्ञेय की विशेषता यह है कि वे प्रकृति को बाहरी दृश्य न बनाकर आंतरिक चिंतन और जीवन-दर्शन का आधार बनाते हैं।

धर्मवीर भारती ने प्रकृति को मानवीय अनुभूतियों और अस्तित्व-संघर्ष से जोड़कर चित्रित किया। उनकी कविताओं में प्रकृति मनुष्य की संवेदनाओं, अकेलेपन, आशा, पीड़ा और सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करने वाली शक्ति के रूप में दिखाई देती है। इस प्रकार नई कविता में प्रकृति आधुनिक मनुष्य के मानसिक और सामाजिक अनुभवों की अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम बन जाती है।

निष्कर्ष :

हिंदी साहित्य में प्रकृति-चित्रण की परंपरा अत्यंत समृद्ध और व्यापक रही है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से लेकर आधुनिक दृष्टिकोण तक प्रकृति के स्वरूप में निरंतर परिवर्तन दिखाई देता है। शास्त्रीय काव्य में प्रकृति को सौंदर्य, देवत्व, आध्यात्मिकता और जीवन-संतुलन के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया गया। इस काल में प्रकृति और मानव जीवन के बीच सामंजस्य, पवित्रता और भावात्मक संबंध प्रमुख रहे।

आधुनिक हिंदी कविता में प्रकृति का चित्रण अधिक यथार्थवादी, अनुभवपरक और चिंतनशील रूप में सामने आया। आधुनिक कवियों ने प्रकृति को केवल सुंदर दृश्य के रूप में नहीं देखा, बल्कि उसे सामाजिक यथार्थ, मानवीय संघर्ष, अकेलेपन, अस्तित्व-बोध और पर्यावरणीय चेतना से जोड़ा। इस प्रकार प्रकृति आधुनिक कविता में जीवन की जटिलताओं और बदलते समय की संवेदनाओं को व्यक्त करने का माध्यम बन गई।

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि हिंदी कविता में प्रकृति-चित्रण का विकास केवल साहित्यिक परिवर्तन नहीं है, बल्कि यह मनुष्य की बदलती हुई दृष्टि, संवेदना और सामाजिक चेतना को भी प्रकट करता है। शास्त्रीय दृष्टिकोण ने प्रकृति को आदर्श, सौंदर्य और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया, जबकि आधुनिक दृष्टिकोण ने उसे यथार्थ, संघर्ष और चेतना से जोड़ा। दोनों दृष्टिकोण मिलकर हिंदी कविता को गहराई, व्यापकता और मानवीय अर्थ प्रदान करते हैं।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 6, Issue 1, January 2023 |

| DOI:10.15680/IJMRSET.2023.0601024 |

सदर्भ ग्रन्थ सूची :

1. कालिदास. (2000). मेघदूतम्. नई दिल्ली: साहित्य अकादमी।
2. तुलसीदास. (2015). रामचरितमानस. वाराणसी: गीता प्रेस।
3. प्रसाद, जयशंकर. (2017). कामायनी. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
4. पंत, सुमित्रानंदन. (1985). उत्तरा. नई दिल्ली: साहित्य भवन।
5. वर्मा, महादेवी. (2018). नीरजा. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
6. नागार्जुन. (1976). युगधारा. पटना: वाणी प्रकाशन।
7. अग्रवाल, केदारनाथ. (1994). फूल नहीं रंग बोलते हैं. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
8. अज्ञेय. (1986). नदी के द्वीप. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
9. भारती, धर्मवीर. (1972). ठंडा लोहा. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor
Impact Factor
7.54

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

निस्केयर
NISCAIR

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH IN SCIENCE, ENGINEERING AND TECHNOLOGY

| Mobile No: +91-6381907438 | Whatsapp: +91-6381907438 | ijmrset@gmail.com |

www.ijmrset.com